क्रम से पढ़िए

1	2	3	4
5	6	7	8
9	10		

यह शब्द सजन दयालु श्री राम चन्द्र जी के मुख के हैं

शब्द है गुरु शरीर नहीं है।

शब्द है गुरु शरीर नहीं है।

1 शब्द गुरु जो जानियों शब्द गुरु करो प्रवान, शब्द गुरु है मूल मंत्र शब्द गुरु है महान। सजना स्टेज दे उत्ते बैठ अपनी मानता मत करा, शब्द गुरु जो मानियों हनुमान जी रहे ने समझा।
हनुमान बलवान हैन ओ शक्तिवान उच्ची है जे उन्हां दी शान, अमर है उन्हां दा नाम सम्भलो सजनों मत होवो नादान।।

भावार्थ :- हे इन्सान स्टेज पर बैठ कर अपनी मानता मत करा, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने यह फ़रमाया है कि गुरु शब्द है शरीर नहीं है। मूल मंत्र जो आद अक्षर है वही शब्द हमारा गुरु है, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए शब्द को ही गुरु मान ।।

2

आहा मेरी ब्रह्म सत्ता हनुमान जी दे वचन करो प्रवान, अपना आप लवो पहचान ओ मेरी ब्रह्म सत्ता ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने कोने डाली डाली, हर अन्दर ओ जापे ओ मेरी ब्रह्म सत्ता ब्रह्म सत्ता पकड़ो इन्सान पा लवो सजनों आत्मिक ज्ञान, ब्रह्म सत्ता हिवे हाज़रा हज़ूर निकट हिवे निवे कोई दूर

10

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म जैंदा रूप रेखा नहीं रंग

ॐ

ओ३म् विच विशेष हूं ओ३म् तूं निर्लेप हूँ

3

ब्रह्म सत्ता है अजपा जाप हम तो हैं सारा जग प्रकाश, ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता।
ब्रह्म सत्ता है बड़ी महान खुद हूँ मैं आप भगवान, ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता।।
ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने कोने डाली डाली, हर अन्दर ओ जापे मेरी ओ ब्रह्म सत्ता।।

4 सजन भाव

समभाव समदृष्टि दा स्कूल खुलया जे, खुलया जे शहर पर शहर और जगह जगह। इस स्कूल की पढ़ाई क्या है ? सजनों सुनो सजन शब्द चलाओ जित्तो मृत लोक नूं

1. सजन सदो सजन सदाओ, सजन ही पहरेवा पाओ
   सजन करो वर्त वर्ताओ, जित्तो मृतलोक नूं
2. जिह्वा स्वतंत्र संकल्प स्वच्छ, इक निगाह इक दृष्टि दिखाओ
   सजन शब्द चलाओ सजनों, जित्तो मृत लोक नूं
3. सजनों पकड़ो आप नूं, खालस सोना हो जाओ
   अपने प्रकाश नूं पाओ, जित्तो मृत लोक नूं
4. कदम कदम ते विचार, विचार नाल होवे प्यार
   दिव्य दृष्टि सजनों दिखाओ, जित्तो मृत लोक नूं
5. सजन शब्द चलाओ ते चलदे जाओ, सजनों ऐसा पराक्रम दिखाओ
   परउपकारी नाम कहाओ, जित्तो मृत लोक नूं

भावार्थ

सजन शब्द बड़ा महान शब्द है जिह्वा से सब को सजन बुलाओ और अपने आप को पाओ। सजन शब्द बुलाने से सारा ब्रह्माण्ड एक सजन हो जाएगा और मौत का भय नहीं रहेगा। सजन शब्द बुलाने से बाकी कोई संकल्प नहीं रहेगा। एक निगाह एक दृष्टि हो कर हमारी दिव्य दृष्टि हो जाएगी, और एक आत्मा हो कर परमात्मा से मेल खा कर ज्योति स्वरूप जो अपना आप है उसकी पहचान कर सकेंगे और रौशन हो जाएंगे।

''सजन है कुल चानणा, सजन है कुल दीपक''

6 ब्रह्म स्वरूप

ब्रह्म स्वरूप है अपना आप
हम तो हैं ओही प्रकाश

1. जेहड़ा प्रकाश देखो मन मन्दिर, ओही प्रकाश देखो जग अन्दर
   ओही प्रकाश देखो रग रग में, ओही प्रकाश देखो सारे जग में
2. ओही प्रकाश हुआ जनचर बनचर, ओही प्रकाश हुआ जड़ चेतन
   ओही प्रकाश है हद हद में, ओही प्रकाश है सारे जग में
3. ओही प्रकाश सप्तद्वीप गगन मंडल, ओही प्रकाश हुआ भूमंडल
   ओही प्रकाश है पग पग में, ओही प्रकाश है सारे जग में
4. ओही प्रकाश हुआ आद अंत, ओही प्रकाश हुआ सूरज चन्द
   ओही प्रकाश है सर्व सर्वज्ञ में, ओही प्रकाश है सारे जग में
5. ओही प्रकाश हुआ निर्वाण दे अन्दर, ओही प्रकाश हुआ जगत जितेन्द्र
   ओही प्रकाश है घट घट में, ओही प्रकाश है सारे जग में

भावार्थ

जो प्रकाश या स्वरूप मैंने अपने मन मन्दिर में देखा है, जिस स्वरूप के साथ मेरा प्यार है। (श्री राम, रहीम, श्री कृष्ण, करीम या दस पातशाह जी के साथ) वही स्वरूप मेरा बाहर हर एक में है और वही मेरी असलियत है। यह सारा प्रतिबिम्ब मेरा ही है। इसी प्रतिबिम्ब को हर एक में देखना है, जनचर बनचर में वही है, जड़ चेतन में उसी का प्रकाश है। यही असलियत मेरा ब्रह्म स्वरूप है 'वृत्ति है जे एहो कमाल वृत्ति है जे एहो विशाल' एहो कोई मुश्किल फड़दा विरला कोई धारण करदा। जेहड़ा देखो सजनों मन मन्दिर प्रकाश ओही ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।

8

अमर है मेरी
आत्मा

न	जन्म	में है
न	मरन	में है
न	रोग	में है
न	सोग	में है
न	खुशी	में है
न	ग़मी	में है
न	मान	में है
न	अपमान	में है
न	अमीरी	में है
न	ग़रीबी	में है
वह	अमीरों का भी अमीर है	

5 सतवस्तु की राम सत

दो सत्संगी सजन आपस में मिलें तो उनको सतवस्तु की राम सत एक दूसरे से पूछनी चाहिए। इस तरह से

1. गृहस्थ धर्म को आप ठीक निभा रहे होंगे
   यह है रुड़दे हुए सजन को पकड़ लेना
2. सच्चाई धर्म के रास्ते पर आप ठीक चल रहे होंगे
   यह है गिरते हुए सजन को खड़ा करना
3. नाम ध्यान में आप महाराज के साथ जुड़े हुए होंगे
   यह है रोते हुए सजन को हँसा देना
4. भक्ति शक्ति आप ने धारण की हुई होगी
   यह है सोए हुए सजन को जगा देना
5. यश और कीर्ति में आपका फ़रक तो नहीं पड़ रहा होगा
   यह है कुरस्ते पड़े हुए सजन को रास्ते पर लाना

भावार्थ

फ़र्ज़ अदा हँस कर करो साग को कड़ाह समझो, तो साग भी एक दिन कड़ाह हो जाएगा और उजड़या घर बस जाएगा। सच बोलो सच चानणा है, झूठ अंधेरा है, सच घर में वर्तो और दुनियां में फैलाओ। धर्म के रास्ते पर चलो धर्म का रास्ता बड़ा महान है इसमें हमारी जीत है। 'धर्म मत हारना रे धर्म के ऊपर तन-मन-धन सब वारना रे'। हर समय महाराज के साथ नैन जोड़ने से रोता इन्सान हँस पड़ेगा, जुड़ना कैसे है ध्यान महाराज की तरफ़ हो। शब्द चलता रहे, फुरना न ठहरे जिसके पास प्रबल भक्ति और तीन वक्त का अखण्ड पाठ होगा तो शक्ति खुद बखुद ताकतवर हो जाएगी। जो प्रकाश महाराज का मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश जग अन्दर देखिये तो बिन हथियारों बिन तीरों आप की जय होगी। अधर्म को छुड़ा कर धर्म का रास्ता दिखाना है। धर्म क्या है:- निष्काम रास्ता कामना से रहित कुरस्ते पड़े सजन को जो रास्ते पर लावेगा वही परउपकारी नाम कहावेगा।

7 मूल मन्त्र

मूल मंत्र है शब्द गुरु

ओ३म्	ओ३म्	ओ३म	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्
ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्	ओ३म्

9 बोर्ड दा सार

मूल मंत्र है शब्द गुरु, मूल मंत्र है शब्द गुरु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने मूल मंत्र शब्द को गुरु बताया और कहा कि हे इन्सान यह तेरी ही ब्रह्म सत्ता है। अगर तूं इस महान सत्ता को ग्रहण कर ले तो तूं खुद ही भगवान है और साथ यह वर्ताव बताया कि शब्द में जुड़ कर सजन भाव और गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्व हो फिर जो प्रकाश तुम ने मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश सारे जग में दिखाई देगा। उस प्रकाश में अटल हो कर हर हालत में एक रस रहो क्यों कि तूं अजन्मा है तेरी आत्मा अमर है। एक आत्मा होकर तू देखेगा कि सर्व सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है फिर ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है और रूप रंग रेखा से बाहर है।